धर्म जीवन

जून - जुलाई 2004

✡ देवात्मा के अमूल्य वचन

✡ देवात्मा का अपमान

✡ विकास का पथ बड़ा विस्मयजनक होता है

✡ अन्याय के खिलाफ शोर मचाएं

✡ मैं नास्तिक क्यों हूं

✡ जमाना हम से है, जमाने से हम नहीं

✡ रोशन होंगे नए चिराग

✡ शुभ संग्राम

देवात्मा के अमूल्य वचन

जब तक नीच घृणा शक्ति नष्ट न हो, तब तक धर्मभावों की काश्त हो नहीं सकती। जैसे कोई बीज अच्छी ज़मीन में ही उग सकता है, यदि उसे आग की भट्टी में डाल दिया जाए तो वह जल जाएगा। इसी प्रकार से नीच घृणा की आग हृदय भूमि को जलाने का काम करती है। यदि यह आग बुझ न सके तो फिर किसी आत्मा के भीतर जो धर्म भावों का मादा मौजूद होता है, वह धीरे धीरे नष्ट हो जाता है।

कोई दूसरा तुम्हारे साथ चाहे कैसा ही बुरा सलूक करे, चाहे कितनी ही घृणा की दृष्टि से देखे, परन्तु तुम्हें कभी किसी को घृणा न करनी चाहिए, बल्कि घृणा करने वालों के साथ भी अच्छा सलूक करना चाहिए। फट जाने वाला मादा दफा होना चाहिए। तुम्हें इससे निकलने की नितांत आवश्यकता है। हृदय घमंड और नीच घृणा से शुद्ध हो तो हमारी ज्योति चमके, मैले हृदय में कोई सत्य नहीं चमकता।

यदि कोई जन हमें घृणा करता है, तो उससे वह हानि उठाता है, हमें क्यों हानि उठानी चाहिए। अहं अनुरागी के दिल पर जब भी कोई चोट लगती है तब ही लड़ाई झगड़ा करना, रोना चिल्लाना, मार पीट और स्यापा करना शुरू कर देता है। घर घर और गांव गांव में इसी कारण से बड़ी बड़ी लड़ाईयां हो रही है। जबरदस्तआदमी इसी अहं अनुराग के कारण दु:ख देने वाले को जान से मार देना चाहता है। जहां उसकी पेश नहीं जाती और वह किसी बलवान के मुकाबिल में दुर्बल होता है वहां वह अपने ऊपर अत्याचार आरम्भ करता है। इसी अहं अनुराग के कारण आत्मघात तक हो रहे हैं। स्त्रियों में यह बिमारी बहुत अधिक है। किसी ज़रा सी दिक्कत तकलीफ के आने पर वह उसे हिम्मत के साथ बरदाशत नहीं कर सकतीं, बल्कि आत्मघात तक करने के लिए तैयार हो जाती हैं। तुम्हारे भीतर हर एक दिक्कत तकलीफ को हिम्मत के साथ बरदाशत करने का भाव आना चाहिए और जिस अहं अनुराग से ही बहुत दिक्कतें, तकलीफें और फ़साद खड़े होते हैं, उससे पूर्णत: मोक्ष लाभ करने के लिए बराबर संग्राम जारी रखना चाहिए।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 2716914

धर्म जीवन

खण्ड 20 अंक 6
जून – जुलाई 2004
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

देवात्मा का अपमान

एक बार गुरु महाराज माता पूजनीया जी सहित सैर को जा रहे थे। माननीय श्रीमान गुरुवंत सिंह जी उनकी सेवा में उपस्थित थे। गुरु महाराज कुछ दूर बैठ गए और माता पूजनीय जी को कहा कि आप श्रीमान गुरुवंत सिंह जी के साथ कुछ आगे तक जा आओ। जब माता पूजनीया जी वापिस आईं, तो गुरु महाराज ने फरमाया कि, "गुरुवंत सिंह जी" आज आपने हमारा अपमान किया है। स्वभाविक ही श्रीमान गुरुवंत सिंह जी हैरान रह गए। गुरु महाराज ने उनको समझाया कि जब वह आगे से मुड़े तो कुछ कदम उन की ओर पीठ करके मुड़े, बेशक फिर वह माता पूजनीया जी के पीछे ही चले। परन्तु इतनी क्रिया से ही गुरु महाराज का अपमान हुआ। इतनी बात मनुष्यात्मा की समझ से ही बाहर है। गुरु महाराज का रूप अति महान है, और हमारा मनुष्य रूप महा नीच है। हमारे द्वारा उनका अपमान होना स्वभाविक है।

इसीलिए देवात्मा ने फरमाया है कि "मैं अज्ञात हूं, अनादृत हूं, सन्तप्त हूं और परित्यक्त हूं।" जिस व्यक्ति वा पदार्थ के प्रकृत रूप के सम्बंध में अबोधी मनुष्य को पूरी सोझी नहीं होती, उसका उसके द्वारा अपमान होना अवश्यम्भावी है। एक सफाई कर्मचारणी ने बिंदी की कीमती डिब्बी को सुरमेदानी समझकर उसमें सुरमा डालकर उसका अपमान किया, एक कुम्हार ने एक बेशकीमते हीरे को कांच का एक मोती समझकर अपने गधे के गले में डाल दिया, यह उस हीरे का अपमान था। एक घोर शराबी ने शराब के नशे में महाराजा रणजीत सिंह जी को जो हाथी पर बैठे थे, कट्टे वाला कहकर पुकारा था।

श्रद्धेय श्रीमान धर्म बल जी ने बैंक के जरूरी कागजात बारे देवात्मा के यह बताने पर भी कि वह पेपर उनके पास नहीं, फिर पूछा कि कहीं उन्होंने किसी और जगह न रख दिए हों, देवात्मा को ठेस पहुंचाई थी।

जब तक मनुष्यों को देवात्मा के आसमान से भी ऊँचे प्रकृत रूप की हार्दिक उपलब्धि नहीं होती, तब तक मनुष्य ने देवात्मा का अपमान

करना ही करना है। अबोधी और नीच जीवन धारी मनुष्य अपमान करने के लिए ही है। इसीलिए देवात्मा ने यह भजन गाया "हमने तुमको नहीं पहचाना" हम सेवक और बहुत सारे कर्मचारी होकर हम देवात्मा को केवल जानते हैं, पहचानते नहीं। इसीलिए देवात्मा का अपमान स्वभाविक रूप से ही हमारे से हो जाना आवश्यक है।

मनुष्य अपनी औकात ही नहीं पहचानता। अधिकतर जन अपने आपको भी जाने बगैर ही कबर में चले जाते हैं।

देवात्मा मनुष्य के सुख अनुरागी रूप के विषय में इस प्रकार रोशनी देते हैं :-

"मनुष्य झूठा, मक्कार, धोखेबाज़, जालसाज, ठग, बेवफा, वायदा खिलाफ, कर्तव्य पालन न करने वाला है।"

यह है मनुष्य का प्रकृत रूप, हमारा सबका ही असली चेहरा। मनुष्य होना, नीच और अपराधी होना एक बात है। धार्मिक दुनिया में मनुष्य और अपराधी समानार्थी शब्द है। हमारा रूप है, "मैं अपराधी, मैं अपराधी।

हम पग पग पर झूठ और बुराई का साथ देकर अपने परम हितकारी देवात्मा को सताते हैं और उनका अपमान करते हैं। साधन न करके, पाठ न करके, संगत में न जाकर, कोई सेवा न करके शुभ अनुरागी का अपमान करके सताते हैं। अपनी प्रतिज्ञाओं का साथ न देकर, उनको भंग करके, उनको खंजर मारने वा अपमान करने का काम करते हैं। समस्त जीवन अर्पणकारी होकर, उनके मिशन में जान तोड़ कर सेवा न करके देवात्मा का अपमान करते हैं। कर्तव्य पूरा न करके, उसे छुपाकर, झूठ मारकर, काम का झूठा दिखावा करके, आशा अनुसार उच्च साधन न करके, इस प्रकार उच्च नियमों को भंग करके और अपने आपको नीच बनाकर, उससे दुखी भी न होकर, गुरु से बेमुख, गुरु महाराज की हानि करके, नीच जीवन से मोक्ष और उच्च जीवन में विकास के निरंतर साधन न करके और ऐसी हानियों का बोध न रखकर, उससे दुख भी बोध न करके हम देवात्मा के कर्मचारी होकर भी उनका घोर अपमान करते हैं। उनके सीने में खंजर घोपने का काम करते हैं। हम सुखों के कीट हानिकारक जीव हैं। और हानि किए बिना नहीं रह सकते।

एक बार गर्मी के दिनों में मैं और श्रीमान गुरुबख्श सिंह जी पुरानी भटिंडा मन्दिर के चौबारे के अंदर खा पीकर सोए हुए थे। जागने पर चौबारे की मैली भद्दी हालत देखी, तो श्रीमान गुरुबख्श सिंह ने मुझे जगाकर कहा कि यदि यहां गुरु महाराज आ जाएं, तो अपने दोनों के ऊपर खूब डंडे पडें कि तुम मेरे कर्मचारी होकर जिस स्थान से सेवा पा रहे हो, उसको साफ रखने का कोई यत्न नहीं करते। चलो हम इसकी सफाई करें। गुरु इच्छा का ख्याल आकर हम दोनों को बिजली का करंट लग गया। हमने कई घंटे लगाकर, नल से पानी भर भर कर लाकर, कमरे को खूब धोया और चमकाया और फिर कच्चे आंगन को भी छिड़काव करके, सुन्दर बना दिया। हम कर्मचारी बन सरालों की तरह सोए रहकर गुरु महाराज का अपमान कर रहे थे, जिससे कुछ समय के लिए जागे और हरकत में आ गए।

हमारे जीवन से पग पग पर देवात्मा का अपमान होता है परन्तु हमारी बेसुधि हमें पब्लिक में

देवात्मा का अपमान करवाती है जो और भी भयानक बात है।

हमारे सामाजिक स्कूलों और कालिजों में उच्च मर्यादा के विरुद्ध कुछ होना देवात्मा का घोर अपमान है। एक बार एक जलसे में एक बच्चे ने मिथ्या अवतारों वा देवी देवताओं के विषय में बोल दिया, इससे श्रीमान मुलख़राज जी लुधियाना बेहद दुखी हुए और कहा कि मिथ्या देवात्मा की संस्थाओं में! उन्होंने काफी ख़बर ली। यदि हमारी संस्थाओं में मिथ्या अनुष्ठानों को इज़ाजत दे दी जाए, लक्की बैग, लाटरी, तंबौला आदि की छूट दे दी जाए, पार्टियों में अण्डे, केक, पेस्टरी आदि का घोर विरोध न करके हम देवात्मा का घोर अपमान करते हैं।

एक बार माननीय परलोकवासी श्रीमान निर्मल सिंह जी ने भटिंडा मंदिर में देवात्मा का एक धर्म संस्थापक से मुकाबला रख दिया। इस मुकाबले के मंच पर देवात्मा की शिक्षा और महिमा का उनके जीवन और लक्ष्य का ऐसा धुआंधार ब्यान किया कि सब अपना सा मुंह लेकर रह गए। इस मुकाबले में देवात्मा की फतह से उन्हें चारों तरफ से प्रशंसा मिली। गुरु महाराज तक भी यह खबर पहुंची, उनसे भी उन्हें खूब वाह वाही मिलने की आशा थी, परन्तु गुरु महाराज ने फरमाया कि मेरे तो अपने ही कर्मचारी मेरा अपमान करते हैं। किसी भी मनुष्यात्मा का देवात्मा से मुकाबला करना उनका घोर अपमान है। जैसे यदि किसी भद्र जन का मुकाबला किसी बड़े से बड़े बलशाली पशु से कर दो, तो उस जन का अपमान है। यदि उनका मुकाबला ही करना था तो श्रीमान देवत्व सिंह जी के साथ कर देते। वह तो उनकी तुलना में भी उच्च सिद्ध नहीं हो सकते।

यह घटना बताती है कि हम देवात्मा के प्रकृत रूप को न पहचानकर कैसे उनके अपमान का कारण बनते हैं।

जैसे यह कहा जाता है कि हनुमान जी ने सूरज को अपनी दाढ़ के नीचे दबा लिया, इस बात पर वही विश्वास कर सकते हैं जिनको भौतिक सूरज के प्रकृत रूप का पता न हो।

मेरे लिए प्रत्येक वह व्यक्ति जो आठ पापों से बचा हुआ है और थोड़ा बहुत भी गुरु महाराज पर विश्वास रखता है सत्कार और प्यार की वस्तु है, वह सिर आंखों पर बिठाने के योग्य लगता है, चाहे वह मुझे बुरा या अपराधी ही समझते हों या कोई और संज्ञा देकर याद करते हों। जिन्होंने कुछ भी गुरु मिशन के लिए कुर्बानी की है, काम किया, वह बहुत मेहरबान लगते हैं, उनके चरणों में झुक कर अपना भला करने का यत्न करता हूं। बेशक नुक्स उन में भी हो सकते हैं, परन्तु नुक्स मेरे में भी हैं, उन्हें देखने का संग्राम करता हूं।

ऐसे प्यारे और माननीय व्यक्तियों को भी जब अपने प्रकृत रूप और देवात्मा के प्रकृत रूप का आभास न हो, तो वह भी देवात्मा की शिक्षा के विरुद्ध, उनके देवरूप के विरूद्ध पब्लिक तौर पर जाकर अपने अद्वितीय गुरु का घोर अपमान, अनादर करने के लिए मजबूर होते हैं और इससे बेखबर रहते हैं। मैं अति तुच्छ और अदना वजूद अपने ऐसे प्यारे और सत्कार योग्य साथियों का ध्यान उक्त अपमान की ओर फेरने की गुस्ताखी करने की आज्ञा चाहता हूं। देवात्मा की शिक्षा के विरुद्ध जाकर उनके देव बोधों को चोट पहुंचाकर, हम

उनका घोर अपमान करते हैं, चाहे हम कितनी ही भागदौड़ कर रहे हो, संग्राम कर रहे हों, क्या सह रहे हों ज़ोरदार प्रचार कर रहे हों, हम अपनी और पब्लिक की और देवात्मा के कारज की या मिशन की कभी पूरी न होने वाली महा हानि करे बिना नहीं रह सकते। चाहे हमें पता लगे या न लगे, परन्तु नेचर के नियम अटल हैं।

जब हम ईश्वर सम्बंधी विश्वास में ढीले पड़ते हैं, ईश्वर के विश्वास के सम्बंध में चुप्पी साध लेते हैं, ईश्वर विरुद्ध पुस्तकों वा पैंफलटों को फैलाने में झिझकते हैं, उस समय हम देवात्मा के सेवक या कर्मचारी होकर घोर अपमान करते हैं। उनके देव हृदय पर छुरियां चलाते हैं, इस प्रकार उनका घोर अपमान करते हैं। जिस गुरू ने अपनी ज्योति में यह साफ देखा और प्रकाशित किया है:-

"नेचर के बिना कुछ सत्य नहीं,
कोई हस्ती भी सत्य नहीं,
ईश्वर या खुदा कोई सत्य नहीं,
कोई वाहिगुरु भी सत्य नहीं।"

जब हम देवात्मा के साथ अप्राकृतिक मिथ्या अस्तित्वों की हस्ती को मानने लगते हैं, उनकी अति ऊँची महानता बताते हैं और परलोक में उच्च लोकों में उनके रहने का प्रचार करते हैं, तो हम अद्वितीय आविर्भाव देवात्मा का अपमान करते हैं। वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अपमान करते हैं। गणेश या हनुमान असम्भव अस्तित्व हैं। अप्राकृतिक वजूद हैं। उन सबका उच्च लोकों में मानना प्रचार करना पहाड़ जितनी गप्प और भ्रान्ति है। बहुत ही बड़ी भूल है।

भगवान देवात्मा अपने दूसरे जीवन संगीत में फरमाते हैं :-

"मिथ्यापन विश्वास से जावे, मिथ्यापन साधन से जावे, मिथ्यापन बरताव से जावे, मिथ्या मूलक भय दुख जावे।"

जिस प्रकार सूरज को दाढ़ के नीचे दबाना बताकर न केवल सूरज का अपमान बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण का भी अपमान है। उसकी रोशनी और तेज का अपमान है, इसी प्रकार हम अति तुच्छ वा हीन जन देवात्मा के प्रकृत रूप को उपलब्ध न करके, अपने अदना रूप को न जानकर, बिल्कुल न चाहकर भी देवात्मा का घोर अपमान करने के लिए मजबूर हैं। हमें पता ही नहीं लगता और नहीं लग सकता।

जब देवात्मा के रूप की उपलब्धि न हो, जो अकसर सेवकों और यहां तक कि कर्मचारियों को भी नहीं होती, तो फिर मूल वाक्य, जिसमें देवात्मा का स्वरूप अंकित है, उसका विशेष महत्व नहीं रह जाता और न ही उसकी विशेष आवश्यकता ही रहती है। इस महत्व से मुन्कर होना, देवात्मा के रूप से मुन्कर होना है। इस महत्व को खोकर कोई देवात्मा का सच्चा श्रद्धालु नहीं बन सकता। सेवक कर्मचारी वा प्रशासक तो बहुत दूर की बात है। मूल वाक्य को जब हम फजूल देखने लगते हैं, तो हम देवात्मा का घोर अपमान करते हैं।

परलोक सत्य है, परन्तु प्रत्येक सभा वा संगत में देवात्मा और उच्च आत्माओं की वर्तमानता बताना, इसका प्रचार करना और कहना कि देवात्मा वह बैठे हैं, वह सभा करवा रहे हैं, जबकि सभा के

ब्यान का स्तर साधारण अच्छे कर्मचारियों जैसा भी नहीं होता, उच्च नतीजे तो क्या पैदा होने थे, यह बहुत बड़ी भ्रान्ति है और देवात्मा का घोर अपमान है, अपना भी कोई लाभ नहीं, बल्कि महा हानि है। जैसे सूरज दाढ़ के नीचे दबाया बताया गया, वैसे ही देवात्मा हमारी जेब में आ गए। हमेशा हमारे अदना मनुष्यों (प्रत्येक मनुष्यात्मा अदना और पिशाच है) की Back and call पर वर्तमान रहते हैं और हमें चला रहे हैं, यह विश्वास करना, हमारे दुर्बल मनुष्यात्मा के रूप का अति घटिया प्रकाश है। और देवात्मा का अवर्णनीय अपमान है।

यदि हमारे जीवन का अपना कोई लक्ष्य नहीं, हम कहलाने वाले देव संदेशों के अनुसार चलना लक्ष्य रखते हैं और प्रचार करते हैं, हमारा अपना नीच जीवन देखने, उससे निकलने और कई उच्च भाव पैदा करने का कोई प्रोग्राम नहीं तो देवात्मा और उनके हित अनुराग का घोर अपमान है। अपनी अंतर आवाज़ को देव संदेशों का नाम देकर भ्रान्ति का शिकार होते हैं और दूसरों को भी मिथ्या गढ़े में धकेल रहे हैं।

जब हम नेचर के नियमों की उल्लंघना करके सहज ही देवात्मा के साथ अपने आपको सम्बन्धित समझते हैं, अटल विश्वास, अटल श्रद्धा और अन्य भावों की उत्पति के बिना ही देवात्मा के साथ सम्बंध जोड़े फिरते हैं, तो हम सत्य नियमों का और देवात्मा का अपमान करते हैं। हम सत्य अनुराग के मर्म को ही नहीं पहचानते। देवात्मा के साथ सम्बंध स्थापन करने और उनके महा दुर्लभ दान को पाने के अपने ठोस नियम हैं। यदि तर्क के लिए यह मान भी लिया जाए कि देवात्मा देवलोक से यहां पधारते हैं फिर भी उनकी वर्तमानता वा उनके कल्पना में दर्शन, संदेशों को गुरु महाराज के संदेश समझकर (जबकि गुरु महाराज के संदेशों का जो स्तर था, और अब और भी कितना ऊँचा होगा, वह हमारे स्तर के लोगों की कल्पना से ही बाहर हैं।) हमें थोथा गर्व प्राप्त तो हो सकता है, हमें मनोवैज्ञानिक तौर पर उच्छवास से भर सकता है, परन्तु इससे देवात्मा के साथ सम्बंध स्थापन नहीं होता। उसके नियम और लक्षण देवात्मा ने स्वयं निर्धारित किए हैं। यदि यह इतना असान होता तो गुरु महाराज की सब संतान, उनके नौकर चाकर और सब कर्मचारी अनुरागी बन गए होते, ऐसा असम्भव है। गुरु महाराज के साक्षात चरणों में रहकर भी मनुष्य उनसे अलग थलग रहता है।

हम सब मनुष्यों पर जन्म से ही अहं जात भावों का ज़ोरदार अधिकार रहता है, इसको सारी उम्र ही साधारणतः मनुष्य नहीं देखते और वह अपने आपको अहं रहित ही देखते हैं। सबसे बढ़कर अपने स्वार्थ वा स्वेच्छा को देखना सबसे कठिन है। देवात्मा ने पूजनीय देव शास्त्र में इसके सम्बंध में आंख खोलने वाली वाणी फरमाई है :- "देवात्मा के परम लक्ष्य में किसी प्रकार की सेवा का भार ग्रहण करके, उन (देवात्मा) की बताई या स्वीकार की हुई किसी एक या दूसरी ऐसी हितकर विधि के अनुसार काम न करके और अपने सुख या अपनी किसी रुचि या इच्छा के अनुसार काम करके ..... और उस काम के सम्बंध में हानिकारक सिद्ध करना..... अपनी इस अबाध्यता के कारण उसकी हानि करके संतुष्ट और प्रसन्न रहना....."

हम सब मनुष्यात्माओं को अपने अहं की भूल भूलैया से सदा सदा और बहुत गहराई से चौकस रहने की आवश्यकता है।

मैं ऐसा क्यों महसूस कर रहा हूं? मैं देवात्मा की कसौटी के अनुसार अदना और नीच मनुष्य हूं। नीच होकर नीच गतियां करता रहता हूं। भयानक से भयानक नीच गतियां हुई हैं, अब भी होती हैं। इनसे मुक्त होना खाला जी का घर नहीं। मैं अदना भी परम उपकारी गुरू का नीच गतियां करके अपमान कर जाता हूं। कभी कभी दिखाई देता है और उस पर शर्मसार होता हूं। मुंह सिर पीटता हूं, अपना मनुष्य रूप कुछ समझ में आता है। ऐसे गंदे को गुरू बचाओ, बचाओ पुकारने के लिए बेबस होता हूं। जब मैं अपने साथियों को पब्लिक में मिथ्या गतियां वा प्रचार करते देखता हूं, उनमें से किसी को अपना गुरु भाई, किसी को अपने बच्चे की तरह देखता हूं, अपने ही अंग संग मानता हूं, कुछ मेरे मन में उनके प्रति स्नेह वा अपनापन है तो उनकी हो रही हानि को देखकर पुकार मचाने, उन्हें फरयाद करने, हाथ बांधने उनके चरणों में सिर रखकर, दुखी होकर प्रार्थना करने लगता हूं कि मेरे भाई या मेरे अज़ीज़ अपनी इस हानि से बच सकें। ऐसी कीमती शक्तियां, ऐसे अच्छे भाव, ऐसा उच्छवास और जोश, ऐसा संग्राम और त्याग, ऐसी भाग दौड़ करके भी खाली हाथ न रहें, मनुष्य हानि को प्राप्त न हो। यह मार्ग आगे बंद है, किसी उच्च मंज़िल तक नहीं ले जा सकेगा। यह मार्ग देवात्मा के निकट नहीं ले जाता। यह घोर गिरावट है, जो देवात्मा से दूर ले जाती है। देव अमृत से जोड़ती नहीं काटती है, यह मिथ्या और अंधता का मार्ग है, भ्रान्ति और हानि का मार्ग है, देवात्मा के घोर अपमान और उनके लिए यातना का मार्ग है।

बहुत गहरी आत्मिक हमदर्दी के बिना शुभ कामना की रट बेअसर और थोथी रह जाती है। यह राम राम जपने की तरह मिथ्या साधन है।

बड़ी भ्रान्ति के शिकार हम तब होते हैं, जब हम देवात्मा के सूरज रूप को पहचान नहीं पाते। देवात्मा मिथ्या के घोर और पूर्ण शत्रु हैं। उनके भीतर मिथ्या समर्थन के विरुद्ध असरलता के विरुद्ध, असत्य जन्य अंधता और असत्य जन्य प्रत्येक सुख के विरुद्ध महा अलौकिक शत्रुता वा देव घृणा वा दुख का सूरज चमकता है। उनके लिए मिथ्या किसी रूप में भी असहनीय है, मौत है। काश! हम सब मिथ्या के पूर्ण शत्रु, मिथ्या को भस्म करने वाले आविर्भाव, मिथ्या को गारत करने वाले इकलौते परम देव को कुछ तो पहचान सकें और अपनी नीच गतियों की अंधता द्वारा उनका घोर अपमान न करें, उनके दोषी बनने से अधिक से अधिक बचें, सदा उनके चरणों में गिरकर क्षमा मांगे और अमृत भिक्षा मांगे।

यह सत्य कभी आंखों से ओझल न होने दूं कि नेचर ने हमें सदा देवात्मा और उनकी रोशनी का मुहताज रखा है, इसके बिना हम भूल भूलैया के चक्कर में फंसने के लिए हैं।

मैं भी एक तुच्छ अदना इंसान हूं। मैं भी गल्त हो सकता हूं। मेरे ऊपर तरस खाकर मुझे बताओ मैं कहां गल्त हूं। मैं चरणों में बैठकर सुनने को तैयार हूं।

(बलदेव सिंह)

विकास का पथ बड़ा विस्मयजनक होता है

सत्य विश्वासों के प्रेरक

आत्मा का सत्य ज्ञान प्रदान करके मेरे भगवान ने ऐसे सत्य प्रदान किए हैं जो हमारे भीतर सत्य और अटल विश्वासों को विकसित करते हैं। उन्होंने बताया है कि यह नेचर या विश्व अपने आप में एक पूर्ण अस्तित्व है। यह नेचर अभाज्य है, स्वयंभू है और अनादि है। इस नेचर में परिवर्तन और विभिन्नता के विश्वव्यापी नियमों का राज्य है। घटनाओं और परिवर्तन की अटल विधियों का नाम ही अटल नियम है। इस प्रकार हमारा वास एक ऐसे विश्व में है जो सत्य और सार है, जिसमें अटल नियमों का राज्य है और यह नियम प्रत्येक अस्तित्व पर काम करते हैं और अपरिवर्तनीय हैं। अत: हम एक पूर्णत: भरोसे के योग्य विश्व में रहते हैं। यह अछिन्न परिवर्तन जो सारे विश्व में काम करता है, दो ही प्रकार का है। पहला परिवर्तन वह है जिसमें कोई अस्तित्व अपने रूप और गुणों के विचार से पहले की अपेक्षा श्रेष्ठ बनता है और दूसरी प्रकार का परिवर्तन मनुष्य को उसके रूप और गुणों के विचार से अश्रेष्ठ बनाता है, और उसका पतन करता है। पहले प्रकार का परिवर्तन विकासकारी और दूसरे प्रकार का विनाशकारी या पतनकारी है। दूसरी प्रकार के परिवर्तन से हमारा शुभ नहीं होता, क्योंकि वह हमें पतन की ओर तथा अंत में विनाश की ओर ले जाता है। इसीलिए हमें उस विनाश के पथ को त्याग करने की आवश्यकता है।

विकास का पथ बड़ा विस्मयजनक और परम कल्याण का पथ है। उसकी दिशा यह है कि पदार्थों और अस्तित्वों तथा नस्लों में उच्च परिवर्तन लाता रहता है। जो उसके आधीन होते हैं, वह श्रेष्ठ बनते जाते हैं। इसी नियम से नेबुला से परिवर्तन होकर एक गठन प्राप्त संसार का निर्माण होता गया। अजीवित या भौतिक शक्तियों से परिवर्तन होकर जीवित शक्तियां बनती गईं। यह नाना प्रकार की जीवनी शक्तियां ही वनस्पति जगत, पशु जगत और मनुष्य जगत में अपना कार्य करती हैं।

विकास का नियम भौतिक और जीवित जगतों के अस्तित्वों को हानिकारक अनमेल से निकाल कर उन्हें उच्च मेल की ओर ले जाता है। विकास और विनाश के दोनों नियम मनुष्य पर अपना कार्य करते हैं।

विकास के नियम का साथी बन कर मनुष्य उन्नत होता है और विकसित होता है। विनाश का साथ न देकर उसका जीवन सुरक्षित होता है।

यह विकास और विनाश के नियम किसी जन या कल्पित ईश्वर और उसके एजेंटों की आज्ञा से ठहर नहीं जाते। विकास और विनाश के नियमों का ज्ञान प्रत्येक मनुष्यात्मा के लिए बड़ा महान लाभ है।

भगवान देवात्मा ने हमें इस सत्य ज्ञान की उपलब्धि कराके हम पर अपार करुणा की है। हमारा पथ प्रदर्शन करने वाली ज्योति हमें प्रदान कर दी है। यह सत्य ज्ञान प्रदान करके उन्होंने ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए की जाने वाली सब प्रार्थनाओं

और कुरबानियों को समाप्त कर दिया है। विकास के नियम को फुसलाया नहीं जा सकता। उसकी खुशामद नहीं की जा सकती। नियमों को तो पूरा करना पड़ता है। कोई नियम पूरा करके उसका फल अनिवार्य है।

हमें अपनी चिंताओं और क्रियाओं का फल प्राप्त करने के लिए किसी पुरस्कार दाता की आवश्यकता नहीं। नेचर का नियम पूरा होने के साथ साथ ही हमें अपने आप ही फल मिलता जाता है। इस महा विशाल विश्व में सब सौदा नकदा नकदी है। उधार का कोई काम नहीं। हमारी प्रत्येक चिंता और क्रिया से उसी समय हमारे शरीर और आत्मा में परिवर्तन आता जाता है। नियम की अटलता और विश्व व्यापकता का ज्ञान इन मिथ्या विश्वासों को दफा कर देता है कि पापों से क्षमा मिल जाती है, किसी की सिफारिश से गुनाह माफ हो जाते हैं, कोई न्याय के या कयामत के दिन दंड और पुरस्कार बांटे जाते हैं और कर्म की थयोरी भी कि जिसके अनुसार यहां के कर्मों का फल पुनर्जन्म में मिलता है, सर्वथा मिथ्या प्रमाणित हो जाती है।

विकास के महान और अटल नियम का ज्ञान हमें इस सत्य विश्वास से भर देता है कि हम इस विकास विषयक नियम का साथ देकर सुरक्षित हो जाते हैं। हमें साथ ही उसका पुरस्कार मिलता जाता है। तुरन्त हम उन्नति के पथ पर पड़ जाते हैं। हम पापों और अपराधों से मुक्त होते जाते हैं और अपने भीतर उच्च गुणों और उच्च भावों को विकसित करते जाते हैं।

भगवान देवात्मा ने हमें यह शिक्षा दी है कि हम पूर्ण नेचर या विश्व का अंश और अंग हैं। यदि हम जीवित रहना चाहते हैं तो हमें सम्पूर्ण विश्व की भलाई में कि जिसके हम अंग हैं, योगदान देना होगा। कैसा महान सत्य! एक बार हम इसको उपलब्ध कर लें, तो फिर समझ लेंगे कि नीच अनुराग और नीच घृणाएं हमारे सबसे भयानक शत्रु हैं क्योंकि वह हमें दूसरों को हानि पहुंचाने की ओर ले जाते हैं।

जबकि मनुष्य मात्र की रक्षा इसमें है कि वह विकास के नियम के साथ मेल करे और उसका सहयोगी बने, और यह तब ही सम्भव है जब वह नीच अनुरागों और नीच घृणाओं से मोक्ष प्राप्त करे और अपने भीतर उच्च भावों को विकसित करे, तो फिर ऐसे सामानों और सम्बन्धियों और ऐसे वातावरण में वास करना और श्वास लेना कैसा महा सौभाग्य है, जिसमें हमारा मोक्ष और विकास सम्भव हो। यह शर्तें नेचर ने नियमित की है, मनुष्य ने नहीं। यह शर्तें देव ज्योति और देव तेज को प्राप्त करने की है। जो इस देव ज्योति और देव तेज को प्राप्त करता है, वह नीच अनुरागों और नीच घृणाओं के भयानक रूप को देखने के योग्य बनता है और नीच रोगों और घृणाओं से मोक्ष और उच्च भावों को विकसित करने की योग्यता भी लाभ करता है। अतएव प्रत्येक अधिकारी मनुष्यात्मा के लिए देव ज्योति और देव तेज लाभ करना अनिवार्य है।

इस देव ज्योति और देव तेज के स्रोत भगवान देवात्मा हैं और कोई नहीं, क्योंकि देव शक्तियों के विकास से ही देव ज्योति और देव तेज का विकास हो सकता है, और देव शक्तियां अपने पूर्ण रूप में परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देव रूप में ही विकसित हुई हैं। मनुष्य जन्म पाकर

भगवान देवात्मा के चरणों में आना कैसा महा सौभाग्य! जहां उनका देवरूप अनुभावातीत और परम श्रेष्ठ और परम सुन्दर है, वहां उनकी देव ज्योति और देव तेज उनके उपासक को अपना आश्रय स्थान और परम सौभाग्य लाभ करने के योग्य बनाते हैं। पूजा के लिए हमें देवात्मा प्राप्त हो जाते हैं और अपने जीवन के लिए हमें उच्च भावों की प्राप्ति होती है कि जिसके द्वारा हम विकास के अद्वितीय नियम के सहयोगी बनते हैं और सुरक्षित हो जाते हैं।

जैसे ही हम दो महान सत्यों को समझ लेते हैं हमें उस अटल और श्रेष्ठतम विश्वास की भी प्राप्ति हो जाती है, जो हमें अपने आत्माके सर्वांग विकास और आत्मा के सर्वोच्च आकर्षक को लाभ करने में सहायता प्रदान करता है। काश हमारा विश्वास बलिष्ठ होता जाए और अधिक से अधिक जीवन्त बनता जाए, ताकि इस विश्वास के द्वारा हम अधिक से अधिक विकास और श्रेष्ठ फलों को प्राप्त कर सकें।

हमारी भगवान देवात्मा के श्री चरणों में यही प्रार्थना है कि हम उपरोक्त विश्वास के दृढ़ विश्वासी बन सकें।

अन्याय के खिलाफ शोर मचाएं

मनुष्य प्रकृति में सबसे प्रधान उसके सुख हैं। अपना सुख और अपनों का सुख ही साधारणत: मनुष्य का लक्ष्य है। उस सुख प्राप्ति में मनुष्य के द्वारा किन किन का सुख छीना जाता है, उसकी उसे परवाह नहीं होती। अपने स्वार्थ से अंधा होकर एक एक जन अपने माता पिता, अपने उपकारियों के प्रति भी अन्यायकारी बन जाता है।

कुछ दिन पहले एक अच्छी जान पहचान वाली स्त्री हमारे घर आई। जब वह जवान थी, तो उसके पति के सम्बंध और स्त्री से थे, वह विवाहित जीवन रखकर भी तिरस्कृत रही। तीन बच्चे थे, उनकी परवरिश का कोई साधन नहीं था, उन बच्चों के लिए वह पति का अन्याय मूलक बर्ताव सहती रही। आखिर पति का देहांत हो गया। एक लड़का दुर्घटना में चल बसा। बेटी अच्छे घर में ब्याही हुई है। एक बेटा बहुत अच्छा कमाता है। 2 बड़ी कोठियों और फैक्टरी का मालिक है। परन्तु उसके साथ वह न्याय नहीं कर रहा। वह इतनी दुखी थी कि उसकी आंखों से आंसु बह रहे थे, और कुछ कहने का भी उसका हौंसला नहीं पड़ रहा था। वह तो यह कहकर चली गई कि फिर कभी अपना दुख बताऊँगी, परन्तु मैं अंदर से हिल गई कि इतनी सेवाएं पाकर बच्चे इतनी अच्छी आमदनी होने पर क्या एक अपनी मां को खुश नहीं रख सकते। हो सकता है कि उमर और हालातों के कारण मां की ओर से भी कोई मुश्किल हों, तो क्या बच्चों की ओर से दुख नहीं होता, पर उनके लिए फिर भी मां बाप करते रहते हैं और उनकी बदतमीज़ियों को भी नज़र अंदाज करते रहते हैं।

यह केवल एक मां बाप की कहानी नहीं

एक एक पत्नि किस प्रकार पतियों के अन्याय का शिकार होती है, परन्तु वर्षों के वर्ष चुप रहती है और सहते सहते, विरोध करने की ताकत ही खो देती है। कुछ आर्थिक रूप से स्वावलम्बी न होकर बच्चों की खातिर, कुछ अपने माता पिता की इज्जत की खातिर वह जुल्म सहती रहती है। जब अन्याय को हम सहते रहते हैं, तो अन्यायकारियों के हौंसले बुलंद होते जाते हैं। यदि शुरू में ही अन्याय का विरोध हो जाए तो कई बार हालात सुधर भी जाते हैं।

अपने पर अन्याय सहना ही कमज़ोर मनुष्यों की आदत बन जाती है, तो दूसरों पर अन्याय होता देखकर तो चुप्पी साध लेना आम बात है। हमारी एक संस्था में मुख्याध्यापिका का स्थान खाली हुआ, तो उनकी जगह एक सीनियर अध्यापिका का हक बनता था, परन्तु कुछ पदधारी अपनी शक्ति के अनुसार अपने निकटी सम्बंधी को वहां नियुक्त करना चाहते थे। हमारी राए का भी उसमें कुछ महत्व था, इसलिए इस नियुक्ति में हमने विरोध किया कि नियुक्ति जिसका हक बनता है, उसकी ही होनी चाहिए, इसकी हमें बड़ी भारी कीमत चुकानी पड़ी, बहुत विरोधताओं का सामना करना पड़ा, परन्तु आज तक भी हमें अपने उस फैसले पर कोई अफसोस नहीं।

हमारे कुछ शुभचिंतकों ने अपनी ताकत दिखाकर एक स्कूल गिरा दिया, इस अन्याय से हमारे दिल को गहरा सदमा लगा और हमने उनकी मदद का बीड़ा उठाया। बेशक स्कूल गिराने वालों के साथ न हमारी कोई शत्रुता थी, और जिनको सड़क पर फैंका गया न उनसे हमारी कोई दोस्ती थी, बात केवल अन्याय कि थी जिसकी वजह से दो वर्ष के करीब हमें अपने बच्चों को घर में बिठाना पड़ा, उसके सब खर्च और समस्याओं को झेलना पड़ा, परन्तु न्याय के साथ खड़े होकर दिल को जो सकून मिला, वह हमारी धरोहर है।

देव समाज के एक अनथक कार्य करने वाले, समाज के आर्थिक, साहित्यक, शिक्षा सम्बंधी और प्रचार के कामों में वर्षों के वर्ष अपनी शक्तियां भेंट करने वाले को कुछ जनों के स्वार्थ ने निकालकर समाज से बाहर फेंक दिया और समाज के बड़े वा छोटे सब इस अन्याय को देखते रहे, किसी ने खुलकर विरोध नहीं किया, नतीजा क्या हुआ, उन भीरु जनों के कारण सारी समाज बिख़र गई और एक एक करके वह भी निकाल दिए गए या बिल्कुल बेअसर हो गए।

अन्याय अपने पर हो या किसी और पर उसके विरोध में न डटना अन्यायकारियों को शह देता है।

पिछले दिनों मैंने तरूण तेजपाल जिन्होंने हमारी सुरक्षा व्यवस्था में जो धांधलियां हो रही हैं, उनकी पोल खोली थी, मनीश कौशल के साथ उनकी बातचीत हुई थी, उसके कुछ अंश हम पाठकों के लिए नीचे दे रहे हैं।

अन्याय के खिलाफ शोर मचाएं :–
सत्य और न्याय की लड़ाई आसान नहीं। इसके लिए चुनौतियों से मुठभेड़ का जज़्बा पैदा करना होगा। जनतंत्र में सत्य और न्याय बेशकीमती है। जाहिर है कोई भी कीमती चीज आसानी से हासिल नहीं होती है। इसके लिए लड़ना पड़ेगा। लेकिन सवाल उठता है कि यह लड़ाई हो कैसे? जनतंत्र में कोई भी लड़ाई आम आदमी की भागीदारी के बिना अधूरी है।

यह भागीदारी ही सबसे जबरदस्त हथियार है। जनता की भागीदारी में बड़ी ताकत है। इसमें सत्ता केंद्रों की चूलें हिला देने का असर होता है। मगर भगीदारी यूं ही तो नहीं पनपती? समाज

उदासीन है तो भागीदारी की उम्मीद ख्वाब ही है। लिहाजा भागीदारी के हथियार को तैयार करने का सबसे बड़ा कलपुर्जा जागरुकता-लोकचेतना का विकास है। एक स्तर पर देश के नागरिकों में समझदारी बनानी होगी। वह समझदारी जनतंत्र के अन्तर्गत एक नागरिक को मिले अधिकार और कर्तव्य दोनों स्थापनाओं से निकलती है। आम आदमी अधिकार का उपभोग तो खुशी खुशी करता है लेकिन कर्तव्यों के प्रति बेपरवाह हो जाता है। जनता में यह चेतना जरूर फैलानी चाहिए कि उसके अधिकार तभी सुरक्षित हैं जब वह कर्तव्य के प्रति सचेत है। खास बात यह है कि जनसेवक जब सार्वजनिक महत्व का पद संभालता है तो आम आदमी की सक्रिय भागीदारी से सबसे ज्यादा डरता है। एक बार जनता को इसका अहसास हो जाना चाहिए कि जनतंत्र में उसकी जागरूक भागीदारी बड़े काम का मंत्र है।

जनमत तैयार करने वाले संस्थान खासकर मीडिया की भूमिका भी अहम है। मीडिया को खामियों को पहचानना, उनको तलाशना और उन्हें बाहर लाना होगा। हालांकि इस राह में बड़ी बाधाएं, प्रलोभन और आशंकाए हैं, लेकिन चुप बैठना कोई इलाज नहीं। 'तहलका' की नज़ीर है। लाख कोशिशों के बावजूद सच की आवाज दबती रही। लिहाजा अपने आस पास अन्याय व जुल्म होते देख चुप न बैठे। अन्याय के खिलाफ शोर मचाएं ताकि अपनी चीख अन्यायी के दिल में डर पैदा कर दे और सोते हुए लोगों को जगा दे।

मैं नास्तिक क्यों हूं?

यह लेख डा० चमन लाल द्वारा सम्पादित किताब भगतसिंह के सम्पूर्ण दस्तावेज से लिया गया है। शहीद भगत सिंह ने लिखा है कि प्रसिद्ध क्रांतिकारी बनने से पहले ही उन्होंने ईश्वर पर विश्वास करना छोड़ दिया था।

क्या मैं अहंकार के कारण सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी तथा सर्वज्ञानी ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास नहीं करता हूं। अपने दोस्तों से बातचीत के दौरान मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मेरे दोस्त इस निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए उत्सुक हैं कि मैं ईश्वर के अस्तित्व को नकार कर कुछ जरूरत से ज्यादा आगे जा रहा हूं और मेरे घमंड ने कुछ हद तक मुझे इस अविश्वास के लिए उकसाया है। मैं ऐसी कोई शेखी नहीं बघारता कि मैं मानवीय कमजोरियों से बहुत ऊपर हूं। मैं एक मनुष्य हूं और इससे अधिक कुछ नहीं। एक कमजोरी मेरे अंदर भी है। अहंकार मेरे स्वभाव का अंग है। जहां तक अन्य प्रचलित मतों के मुकाबले हमारे अपने मत का सवाल है, मुझे निश्चय ही अपने मत पर गर्व है। लेकिन यह व्यक्तिगत नहीं है। ऐसा हो सकता है कि यह केवल अपने विश्वास के प्रति न्यायोचित गर्व हो और इसको घमंड नहीं कहा जा सकता। घमंड या सही अर्थों में अहंकार तो स्वयं के प्रति अनुचित गर्व की अधिकता है। तो फिर क्या यह अनुचित गर्व है जो मुझे नास्तिकता की ओर ले गया, अथवा इस विषय का खूब सावधानी के साथ अध्ययन करने और उस पर खूब विचार करने के बाद मैंने ईश्वर पर अविश्वास किया? मैं यह साफ कर दूं कि आत्माभिमान और अहंकार दो अलग

अलग बाते हैं।

मेरा नास्तिकतावाद कोई अभी हाल की उत्पति नहीं है। मैंने तो ईश्वर पर विश्वास करना तब छोड़ दिया था जब एक अप्रसिद्ध नौजवान था। मैं एक लज्जालु स्वभाव का लड़का था, जिसकी भविष्य के बारे में कुछ निराशावादी प्रकृति थी। और उन दिनों मैं पूर्ण नास्तिक नहीं था। मेरे बाबा जिनके प्रभाव में मैं बड़ा हुआ, एक रूढिवादी आर्यसमाजी हैं। एक आर्यसमाजी नास्तिक नहीं होता। जब मैंने डीएवी स्कूल, लाहौर में प्रवेश लिया और पूरे एक साल उसके छात्रावास में रहा, वहां सुबह और शाम की प्रार्थना में मैंने अपने पिता के साथ रहना शुरू किया। उन्हीं की शिक्षा से मुझे स्वतंत्रता के ध्येय के लिए अपने जीवन को समर्पित करने की प्रेरणा मिली। उनका ईश्वर में दृढ़ विश्वास है। वे मुझे प्रतिदिन पूजा प्रार्थना के लिए प्रोत्साहित करते रहते थे। असहयोग के दिनों में मैंने राष्ट्रीय कॉलेज में प्रवेश लिया। यहां आकर मैंने सारी धार्मिक समस्याओं, यहां तक कि ईश्वर के बारे में उदारपूर्वक सोचना, विचारना और उसकी आलोचना करना शुरू किया। पर अभी भी मैं पक्का आस्तिक था। बाद में मैं क्रांतिकारी पार्टी से जुड़ा। वहां पर जिस पहले नेता से मेरा संपर्क हुआ था, वे तो पक्का विश्वास न हो हुए भी ईश्वर के अस्तित्व को नकारने का साहस ही नहीं कर सकते थे। मेरे पूछने पर वे कहते, 'जब इच्छा हो तब पूजा कर लिया करो। दूसरे नेता जिनके मैं सपर्क में आया वे पक्के श्रद्धालु थे। उनका नाम बता दूं आदरणीय कामरेड शचीन्द्रनाथ सान्याल। उनकी अकेली प्रसिद्ध पुस्तक बंदी जीवन में पहले पेज से ही ईश्वर की महिमा का जोर शोर से गान है। 28 जनवरी 1925 को पूरे भारत में जो द रिवोल्यूशनरी का पर्चा बांटा गया था, वह अभियोग पक्ष की कहानी के अनुसार उन्हीं के बौद्धिक श्रम का परिणाम है। उस पर्चे में पूरा पेराग्राफ उस सर्वशक्तिामन तथा उसकी लीला एवं कार्यों की प्रशंसा से भरा पड़ा था। मैं जो कहना चाहता था वह यह है कि ईश्वर के प्रति अविश्वास का भाव क्रांतिकारी दल में भी प्रस्फुटित नहीं हुआ था। काकोरी के प्रसिद्ध सभी चार शहीदों ने अपने अंतिम दिन भजन प्रार्थना में गुजारे थे। रामप्रसाद बिस्मिल एक रूढ़िवादी आर्यसमाजी थे समाजवाद तथा साम्यवाद में अपने बृहद् अध्ययन के बावजूद राजेंद्र लाहिड़ी उपनिषद् एवं गीता के श्लोकों के उच्चारण की अपनी अभिलाषा को दबा न सके। मैंने उन सबमें सिर्फ एक ही व्यक्ति को देखा जो कभी प्रार्थना नहीं करता था और कहता था, 'दर्शनशास्त्र मनुष्य की दुर्बलता अथवा ज्ञान के सीमित होने के कारण उत्पन्न होता है।' वह भी आजीवन निर्वासन की सजा भोग रहा है। परंतु उसने भी ईश्वर के अस्तित्व को नकारने की कभी हिम्मत नहीं की।

इस समय तक मैं केवल एक रोमांटिक आदर्शवादी क्रांतिकारी था। अब तक हम दूसरों का अनुसरण करते थे, अब अपने कंधों पर जिम्मेदारी उठाने का समय आया था। कुछ समय तक तो अवश्यम्भावी प्रक्रिया के फलस्वरूप पार्टी का अस्तित्व ही असंभव सा दिखा। उत्साही कामरेडों ने ही नहीं, नेताओं ने भी हमारा उपहास करना शुरू कर दिया। कुछ समय तक तो मुझे यह डर लगा कि एक दिन मैं भी कहीं अपने कार्यक्रम की व्यर्थता के बारे में आश्वस्त न हो जाऊँ। वह मेरे क्रान्तिकारी जीवन का एक निर्णायक बिंदु था। अध्ययन की पुकार मेरे मन के गलियारों में गूंज रही थी–विरोधियों द्वारा रखे गए तर्कों का सामना करने योग्य बनने के लिए

अध्ययन करो। अपने मत के समर्थन में तर्क देने के लिए सक्षम होने के वास्ते पढ़ो। मैंने पढ़ना शुरू कर दिया। इससे मेरे पुराने विचार व विश्वास अद्‌भुत रूप से परिष्कृत हुए। हिंसात्मक तरीकों को अपनाने का रोमांस, जोकि हमारे पुराने साथियों में अत्यधिक व्याप्त था, की जगह गंभीर विचारों ने ले ली। अब रहस्यवाद और अंधविश्वास के लिए कोई स्थान नहीं रहा। यर्थाथवाद हमारा आधार बना। हिंसा तभी न्यायोचित है जब किसी विकट आवश्यकता ने उसका सहारा लिया है। अहिंसा सभी जन अंदोलनों का अनिवार्य सिद्धांत होना चाहिए। यह तो रही तरीकों की बात। सबसे आवश्यक बात उस आदर्श की स्पष्ट धारणा है जिसके लिए हमें लड़ना है। चूंकि उस समय कोई विशेष क्रांतिकारी कार्य नहीं हो रहा था, अतः मुझे विश्व क्रांति के अनेक आदर्शों को पढ़ने का मौका खूब मिला। मैंने अराजकतावादी नेता बाकुनिन को पढ़ा, कुछ साम्यवाद के पिता मार्क्स को, किंतु ज्यादातर लेनिन, त्रात्सकी व अन्य लोगों को पढ़ा, जो अपने देश में सफलतापूर्वक क्रांति लाए थे। वे सभी नास्तिक थे। बाकुनिन की पुस्तक 'ईश्वर और राज्य' इस विषय पर यद्यपि आंशिक रूप में, एक अच्छा अध्ययन है। बाद में मुझे निरलम्ब स्वामी द्वारा लिखी पुस्तक 'सहज ज्ञान' मिली। इसमें केवल एक रहस्यवादी नास्तिकता थी। इस विषय के प्रति मेरा गहरा रुझान हो गया। 1926के अंत तक मुझे इस बात का विश्वास हो गया कि सर्वशक्तिमान परम आत्मा की बात जिसने ब्रह्माण्ड का सृजन किया, दिग्दर्शन और संचालन किया एक कोरी बकवास है। मैंने अपने इस अविश्वास को प्रदर्शित किया। मैंने इस विषय पर अपने दोस्तों से बहस की। मैं एक घोषित नास्तिक हो चुका था। यह मेरा अहंकार नहीं था, जो मुझे नास्तिकता की ओर ले गया। मैं जानता हूं कि वर्तमान परिस्थितियों में ईश्वर पर विश्वास ने मेरा जीवन आसान और मेरा बोझ हल्का कर दिया होता और उस मेरे अविश्वास ने सारे वातावरण को अत्यंत शुष्क बना दिया है और परिस्थितयां एक कठोर रूप ले सकती हैं। थोड़ा सा रहस्यवाद इसे कवित्वमय बना सकता है। किंतु मेरे भाग्य को किसी उन्माद का सहारा नहीं चाहिए। मैं यर्थाथवादी हूं। मैं अपनी अन्तः प्रकृति पर विवेक की सहायता से विजय चाहता हूं। इस ध्येय में मैं सदैव सफल नहीं हुआ हूं। प्रयत्न तथा प्रयास करना मनुष्य का कर्तव्य है, सफलता तो संयोग तथा वातावरण पर निर्भर है।

(भास्कर से प्राप्त)

जमाना हम से है, जमाने से हम नहीं

बात दिल से निकली है और दिल पूछता है – कहां गए वे लोग जिनके खड़े होने से जनमानस बदलता था, जिनकी रहनुमाई में कौमें आजाद होती थीं, जिनकी कलम से सरकारें डगमगाती थी, जो गरीबों के मसीहा कहलाते थे और जिनकी खुद्‌दारी को देवता तक सलाम करते थे। कहां गए जवाहरलाल? कहां गए लोहिया? कहां गए हैं दुर्गादास, मुलगावंकर, चालापति राव और पराड़कर?

कहां गए दिनकर? कहां गए फिराक जिन्होंने कलम के सिपाही को स्वाभिमान की ये ऊँचाईयां प्रदान कीं जो सदियों तक गूंजती रहेंगी "पैगम्बरों इश्क हूं, समझ मेरा मुकाम/सदियों में फिर सुनाई देगा ये पयाम। वो देख कि आफताब सिजदे में गिरे/वो देख, उठे देवता भी करने लगे सलाम।" कहां गए वो कद्दावर लोग जो यह कहते हुए संसार से विदा हो गए- "मैं अकेला ही चला था, जानिब-ए-मंजिल, मगर लोग आते गए, कारवां बनता गया।"

क्या ये लोग अपना घर खाली करके सदा के लिए दरवाजे बंद कर गए? क्या उन ऊँचाईयों को छूने वाले अब नहीं रहे? क्या आदमी की संरचना बदल गई? क्या मानव हृदय की संवेदनाएं, उसकी अथाह गहराइयां, उसके उन्मुक्त विवेक सब सुषुप्त हो गए? क्या सूरज चांद में परिवर्तन हुआ? नहीं, ऐसा तो नहीं। दुनिया वही है, पृथ्वी वही है, प्रकृति वही है, आदमी वही है, उसका विवेक वही है। सभी कुछ वही है, तो ऐसा क्यों हो कि टूटते और उखड़ते मानवीय मूल्यों की इस आपाधापी में हम आदमी के उस रूप की तलाश में भटकते रहें जिसने मानवीय शाश्वत, मूल्यों की स्थापना की, हृदय को विशाल बनाया, चारित्रिक बल दिया और कठिनतम परिस्थितियों में स्वयं को खड़ा रखने का साहस दिया, वह कद प्रदान किया जिसके आधार पर गरीब और असहाय जन की पहचान बनी। ऐसा नहीं कि हमने तरक्की नहीं की। भौतिक प्रगति का अनुमान लगाएं तो समस्त प्रकृति में आदमी का कोई मुकाबला नहीं। दुनिया को अपनी उंगली पर नचाने के लिए तैयार है, लेकिन जमाने को पीछे छोड़ जाने की दौड़ में अपनी अंतरात्मा को भुला बैठा है।

बात छोटी-सी है, पर बुनियादी है। जरा सोचकर देखिए। कितनी बार आप अपने पड़ोसी की सहायता के लिए तैयार हुए हैं? कितनी बार दैनिक जीवन में होने वाले भ्रष्टाचार के खिलाफ आपने आवाज बुलंद की है? कितनी बार जमाने की परवाह किए बगैर अपने सिद्धांतों पर अटल खड़े रहे हैं? कहने का मतलब यह है कि दैनिक जीवन को जीते हुए यदि आपने अपने काम को अनाचार, ओछेपन, क्षुद्रता, स्वार्थ, लालच, धूर्तता और दंभ से परे रखने का जरा भी प्रयास किया है, तो आपमें निःसंदेह वे सभी गुण मौजूद हैं जिन्हें हम याद करते हैं। चारित्रिक बल, यश और संपन्नता का पासपोर्ट तो नहीं। अलबत्ता, सफल इंसान का वह अहसास जरूर है जो उसे आत्मसंतोष, मानसिक सुख और आनंद प्रदान करता है। कहने को ये सभी बातें आज के भौतिकवादी युग में बेसिर पैर की लफ्फाजी कही जाती है। तर्क सही है। जमाने के साथ चलना चाहिए, पर क्या यह भी सही नहीं कि आदमी अपनी संवेदनाओं को, अपनी भावनाओं को प्रेम, विश्वास, मित्रता तथा, आपसी संबंधों को सदा जीवंत बनाए रखने का प्रयास करे, ताकि प्रकृति प्रदत्त जीवों में वह सिरमौर का अपना स्थान अक्षुण्ण बनाए रखे, जो प्रकृति में उसके अस्तित्व का केन्द्र बिंदु है? मानव मन एक समान है। सभी में गुण दोष हैं। आवश्यकता केवल नजरिये की है।

रोशन होंगे नए चिराग

चलेंगी करिश्माई कारें

जेम्स बांड की फिल्मों में नजर आने वाली कारें अब हकीकत में नजर आएंगी। कारें भी ऐसी कि इनकी टेक्नोलॉजी हमें हैरत में डाल देगी। यहां प्रस्तुत है ऐसी तीन कारें जो 2004 में विश्व बाजार में हलचल मचाने आ रही हैं।

1. फोर्ड की एस 2 आरवी कार फोर्ड एक्सप्लोरर एस 2 आरवी, यानी स्मार्ट, सेफ रिसर्च वेहेकिल, एक कार नहीं बल्कि आटोमोटिक टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में अब तक हुई प्रगति की बेहद शानदार कलाकृति है। अपने मालिक की आवाज से ऑपरेट होने वाली यह कार 2004 में बिक्री के लिए उपलब्ध हो रही है। दर्जनों सेंसर्स और ब्लूटुथ टेक्नोलॉजी से युक्त फोर्ड एस 2 आरवी कार ड्राइविंग के दौरान अपनी सुरक्षा का ध्यान स्वयं ही रखती है और दुर्घटना की हल्की सी संभावना के उत्पन्न होते ही यह ड्राइवर को सचेत कर देती है। आपके रास्तें में आगे कहीं जाम तो नहीं है, कार इसका ख्याल भी अपने साइड मिरर्स में लगे कैमरों और उपग्रह संचार प्रणाली की मदद से स्वयं ही रखती है। फोर्ड एस 2 आरवी के नेवीगेशन सिस्टम में रियल टाईम ट्रैफिक इनफारमेशन का प्रयोग किया गया है, जो मार्ग में जाम जैसी स्थिति की संभावना उत्पन्न हेते ही ड्राइवर को तुरंत वैकल्पिक मार्ग सुझा देता है। रात हो या दिन फोर्ड एस 2 आरवी कार पूरी यात्रा के दौरान अपने एक्टिव नाईट विजन और इंफारेड लेजर्स की मदद से ड्राइवर को अपने आगे और पीछे के करीब दो किलोमीटर के मार्ग और इसमें संभावित बाधाओं को एक मॉनीटर पर दिखाती रहती है। इसके साथ ही यह ड्राइवर को कार के आगे और पीछै के ट्रैफिक की स्थिति और पास आने वाले वाहन की गति की भी सटीक जानकारी उपलब्ध कराती है।

देह के अंदर की वीडियो इमेज

हृदय रोग, कैंसर और अंदरूनी घाव जैसे गंभीर रोगों की स्थिति में अंदरुनी जांच की आवश्यकता भी पड़ती है। यूनिवर्सिटी आफ लंदन के शोधकर्ताओं ने शरीर की अंदरूनी जांच को और सहज तथा सरल बना दिया है। शोधकर्ताओं ने सूक्ष्म वीडियो उपकरणों से सज्जित अंगूर के दाने से आधे के आकार का एक अनोखा कैप्सूल बना लिया है। यह दुनिया का ऐसा पहला कैप्सूल है जिसे शरीर में प्रवेश कराकर डाक्टर रिमोट कंट्रोल की मदद से शरीर के मनचाहे हिस्से में ले जाकर वहां की वीडियो इमेज प्राप्त कर सकते हैं। इस वर्ष यूनिवर्सिटी आफ लंदन के शोधकताओं की टीम के एक सदस्य पर ही इसका पहला और सफल परीक्षण किया गया। अगले वर्ष इसके कुछ और परीक्षण होंगे और इसके बाद यह व्यावसायिक इस्तेमाल के लिए दुनियाभर में उपलब्ध हो जाएगा।

सर्दी में भी गर्मी का अहसास

वर्ष 2004 में पश्चिमी देशों के लोग एक

नई तकनीक से परिचित होंगे। कोलोरेडों के कुछ वैज्ञानिक प्राकृतिक तरीके से उर्जा संचय करके एक ऐसा हीट पंप बना रहें हैं जिसमें वातावरण वायु से उर्जा अवशोषित कर उसे घरों में पहुंचाएगी। हीट पम्प्स की इस तकनीक से 100 डिग्री तापमान उत्पन्न हो सकेगा। जो ठंडे से इलाकों के लिए राहत की बात होगी। इसको चलाने के लिए बेहद कम बिजली खर्च होगी। यह परंपरागत तकनीकों से तीन सौ प्रतिशत ज्यादा उष्मा प्रदान करेगी। वैज्ञानिकों ने एक और ऐसा पंप भी आविष्कृत किया है जो भूमिगत जल की उष्मा को अवशोषित उष्मा प्रदान करेगी। मध्य पूर्वी देशों के लोगों के लिए यह पंप बेहद उपयोगी होंगे। खास बात ये है कि दोनों ही पंप परंपरागत पंपों की तुलना में ज्यादा बेहतर और पर्यावरण के मित्र हैं।

पानी पर फिसलेगी कार

नए वर्ष के तोहफे के तौर पर गिब्स की कार एक्वाडा बाजार में आ रही है। एक्वाडा कार और स्टीमर का मिला जुला रूप है। सड़कों पर एक्वाडा का 175 एचपी का इंजन इसे 100 मील प्रति घंटे की उच्चतम रफ्तार प्रदान करता है तो वहीं समुद्र में जाते ही कार ड्राइविंग के दूसरे मोड में स्वत: चली जाती है। कार के पहिए अंदर मुड़ जाते हैं। और यह कार जेट इंजन युक्त स्की स्टीमर जैसी बन जाती है। समुद्र में एक्वाडा 35 मील प्रति घंटे की रफ्तार आसानी से हासिल कर लेती है।

सुरक्षित बनेगी अंतरिक्ष यात्रा

कोलंबिया हादसे से अमेरिका के अंतरिक्ष कार्यक्रमों खासतौर पर स्पेस शटल अभियानों को गहरा धक्का पहुंचा है। नासा और अमेरिका का निजी क्षेत्र दोनों ही ऐसे तकनीकों को विकसित करने में जुटे हैं जिससे मानव को पृथ्वी के वातावरण से अधिक सुरक्षित तरीके से निकालकर अंतरिक्ष के शून्य गुरुत्व माहौल में प्रवेश कराया जा सके और उतनी ही सावधानी और बगैर किसी जोखिम के उसे वापस धरती पर भी लाया जा सके। ऐसी सर्वथा नई तकनीक को खोजने का श्रेय बर्ट रुटैन को जाता है जिन्होंने अप्रैल 2003 में अपनी नई तकनीक का प्रारूप टायर वन के नाम से तैयार किया है। और 2004 में इसका व्यावसायिक इस्तेमाल शुरू हो जाने की पूरी संभावना है। टायर वन से मानव को अंतरिक्ष में भेजने का काम दो चरणों में संपन्न होता है। पहले चरण में जेट इंजन वाला व्हाइट नाइट कैरियर एयरोप्लेन 50,000 फुट की उंचाई तक उड़ान भरता है। और इस उंचाई पर व्हाइट नाइट कैरियर से जुड़ा अंडे के आकार का स्पेसशिप वन राकेट प्लेन अलग होकर 60 मील से अधिक की उंचाई तक की आगे की यात्रा तय करता है। यह दूरी इतनी अधिक है कि स्पेसशिप वन आराम से अपनी कक्षा में स्थापित हो जाता है। पृथ्वी की ओर वापसी यात्रा के दौरान स्पेसशिप वन लट्टू की तरह नाचते हुए वातावरण में प्रवेश करता है। इससे स्पेसशिप पर एयरोडायनामिक दबाव घट जाता है और पुन: प्रवेश के दौरान एयरक्राफ्ट का तापमान बहुत ज्यादा नहीं बढ़ता है। इसके बाद यह सामान्य विमान की तरह आराम से उड़ते हुए धरती पर लैंड कर जाता है। 2004 यह कर दिखाने की दिशा में अगला कदम होगा।

शुभ संग्राम

30 अप्रैल, 2004 को श्रीमान बलदेव सिंह जी अपने साथियों के साथ रुड़की पहुंचे। रात को साढ़े आठ बजे एक सभा की गई। भजन के गान के बाद अहं क्या है? के विषय में वर्णन किया गया। बहुत से मिथ्या विश्वास तो हमें दिखाई देते हैं, परन्तु घमंड के कारण जो मिथ्या विश्वास पैदा होते हैं, वह हमें दिखाई नहीं देते। घमंड के कारण हम अपने वास्तविक रूप को नहीं देख सकते। घमंड हमारे अपने प्रति अंधेरा पैदा कर देता है। हमें गुस्सा क्यों आता है? मनुष्य प्रकृति सुख अनुरागी है। जब सुख पर चोट लगती है, तो गुस्सा आता है। अपनत्व वा स्वार्थ को हम अपनी मान्सिक योग्यताओं से कुछ समझते हैं, लेकिन उनके अपने भीतर होने की गहराई को नहीं समझ सकते। स्वेच्छाचारिता के विषय में बताया गया। श्रद्धेया डा॰ प्रेम देवी जी के जीवन की महानता के विषय में बताया गया। भगवान देवात्मा की क्या इच्छा है? सत्य और शुभ का अनुकरण, मिथ्या पाप का नाश। अपनत्व, प्रशंसा हमें इस ओर चलने नहीं देती। ईर्ष्या का भाव महा हानिकारक है। इन नीच भावों से बचने के लिए सारी उम्र की तपस्या की आवश्यकता है। देवात्मा की रोशनी में अपनत्व नज़र आती है। हृदयों में उच्च परिवर्तन होता है, उदाहरणों सहित उसका वर्णन किया गया।

1 मई, 2004 को सुबह साढ़े आठ बजे सभा की गई। इसमें देवात्मा के अदभुत और विचित्र आविर्भाव के विषय में बताया गया। और गुरुओं को पहचानना सहज है, परन्तु देवात्मा को पहचानना अति कठिन है परन्तु हवा, पानी जैसे आवश्यक है, वैसे ही देवात्मा को पहचानना आत्मिक भलाई के लिए आवश्यक है। देवात्मा ने फरमाया है कि धर्म किसी विश्वास से नहीं आता, धर्म उच्च भावों का नाम है। उच्च गतियों से धर्म आता है। उच्च गति उच्च भावों से होती है, उच्च भावों के लिए निज के साधन की आवश्यकता है। उच्च भावों से भी कई बार नीच गतियां हो जाती हैं। देवात्मा मनुष्य को असल रूप से धर्मवान बनाते हैं। उनकी विज्ञान मूलक शिक्षा सही अर्थों में हमें जीना सिखाती है। भगवान समबंधों में जीना सिखाते हैं।

1 मई, 2004 की शाम को सभा की गई। इसमें आत्मिक अंधेरे के विषय में बताया गया। आत्मिक अंधेरे में मनुष्य नीच भावों के अधीन मदारी के बंदर की तरह नाचता है। देवात्मा की रोशनी हमारे नीच भावों को दिखाती है। नीच भावों द्वारा हमारी अपनी वा समाज की कितनी हानि है। इन नीच भावों के कारण ही हमारे सम्बंधों में नर्क है। हम चाहते हैं दूसरे हमारे लिए कुछ करें, हम किसी के लिए कुछ नहीं करना चाहते। हम स्वार्थी होकर जीते हैं। तो हमें सुख वा खुशी कहां से मिल सकती है। देवात्मा हमारे रूप को दिखाते हैं। नीचता के प्रति घृणा पैदा करते हैं, परिशोध करवाते हैं, और हमें जीने लायक बनाते हैं।

2 मई, 2004 को सभा की गई। इसके सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी थे। उन्होंने बताया कि सफलता का अर्थ क्या है? हम दुनियावी नौकरी वा पदार्थों के मिल जाने को सफलता समझते हैं। परन्तु असल सफलता हृदय के बेहतर बनने में हैं। जीवन की सफलता नीच भावों को कम करने और उच्च भावों को पैदा करने से होती है। श्रद्धा भाव की सुन्दर तस्वीर पेश की गई कि यह भाव हमें दूसरों की महानता दिखाता है। शुक्रगुज़ारी का भाव दूसरों के उपकारों को दिखाकर, उपकारियों के लिए सेवाकारी बनाता है। शुक्रगुज़ार बच्चे पैदा होने से स्वर्ग और नाशुक्रेपन से नर्क पैदा होता है। देव प्रभावों के द्वारा कैसे नीच भाव घटते हैं, और उच्च भाव बढ़ते हैं, उनके उदाहरण पेश किए गए। रुड़की का यह प्रोग्राम सहायकारियों की सहायता से, नवनीत

Regd. Postal No.Pb (0050) 2003
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

जी और कांसल साहिब ने 2 बार सब को खाना खिलाया और सब की सेवा करते रहे, काफी सफल रहा। लोकल सेवक वा श्रद्धालु आकर लाभ उठाते रहे।

2 मई, 2004 को रात को कुंआखेड़ा में सभा की गई। सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी थे। इस सभा में बताया गया, मनुष्य ने मान्सिक शक्तियों के लिहाज़ से पशुओं से बहुत अधिक उन्नति की है, परन्तु हार्दिक शक्तियों के लिहाज से मनुष्य पशुओं के स्तर से भी नीचे आ गया है। नशे की गुलामी, स्वाद सुख, आलस्य सुख और काम सुख की गुलामी से बहुत हानि उठा रहा है, इसके उदाहरण पेश किए गए। देवात्मा गुरु से जुड़कर मनुष्य इस हानि से बच सकता है। देवात्मा का यह दावा है कि कोई मनुष्य ऐसा नहीं जो उनसे जुड़ा हो और अपनी योग्यता अनुसार पहले से बेहतर न हुआ हो। देवात्मा से जुड़कर ही नीच शक्तियों से छुटकारा हो सकता है। यह सभा बहुत प्रभावशाली रही।

3 मई, 2004 की सुबह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने कराई। उन्होंने नेचर के अटल नियमों के विषय में बताया। नेचर के नियमों के विरुद्ध कोई घटना असम्भव है। ईलाज और सेहत के नियम हैं। अमीरी, गरीबी के नियम हैं। नियम किसी पूजा, पाठ वा जप से नहीं बदलते। साईस की कसौटियां हैं। हम अपने विश्वासों को परख कर देखें। किस की पूजा करनी है, किसकी नहीं, यह देवात्मा की रोशनी हमें बताती है। देवात्मा की शिक्षा विज्ञान मूलक है, वह हमें सम्बंधों में जीना सिखाते हैं। ऐसे गुरु को अधिक से अधिक समझ सकें।

3 मई, 2004 की रात की सभा में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि पापाचार जहां है, वहां धर्म नहीं। आठ सेवकी की प्रतिज्ञाओं के विषय में बताया। देवात्मा हमें मिथ्या से भी मुक्त करते हैं। वैज्ञानिक दृष्टिकोण देते हैं। सत्संग, साधन वा सेवा के विषय में बताया। श्रद्धापूर्वक प्रणाम करना क्या होता है, उसके विषय में बताया गया।

4 मई, 2004 सुबह की सभा में श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने धर्म, पाप वा पुण्य की परिभाषाएं बताई। किसी भी अस्तित्व का रूप पहले से बिगाड़ना पाप है, पहले से सुन्दर बनाना पुण्य है, यह देवात्मा का फरमान है। हमारे सम्बंध, हमारा घर अच्छा है तो वह पुण्य वा धर्म है, नहीं तो हम अधर्मी हैं। देवात्मा की आद्वतीय शिक्षा है, क्रान्तिकारी है। वह धरती धन्य है, जहां ऐसे धर्म जगत के सूर्य उदय हुए। हमारे सम्बंध हमारे लिए हितकर कर दिए, पाप और मिथ्या से मोटे तौरपर बचा दिया। सभा से सब जनों ने अच्छा लाभ उठाया।

रतन सिंह चौहान और उनके पारिवारिक जनों ने पार्टी की बहुत सेवा की। 260 रूपये दान में दिए और फिर आने के लिए निमन्त्रित किया।

(एक सेवक)

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

सम्पादक डा॰ विनोद खेड़ा